नीबूवर्गीय फल समाचार पत्र

आई.एस.ओ. 9001 : 2008 प्रमाणित संस्थान

भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय नीबूवर्गीय फल अनुसंधान संस्थान, नागपुर

खण्ड 3 क्रमांक 4 अक्टूबर–दिसम्बर, 2016

विषय सूची

- निदेशक की कलम से.. 1
- नीबूवर्गीय फल क्षेत्र से.. 1
- संस्थान से 2
- सुझाव/प्रतिसूचना 8

निदेशक की कलम से.............

प्रिय पाठकों,

वर्ष 2016, में सामान्यतया अच्छी वर्षा हुई तथा संतरा उत्पादकों को 2015 के अंबिया फसल (वसंत बहार) की तुलना में उनके उत्पाद को अच्छा मूल्य प्राप्त हुआ क्योंकि फसल की तुड़ाई अक्टूबर – दिसंबर माह में की गई। कुछ किसान अपनी फसल को जनवरी माह तक रोकते हैं जिससे रू 40,000 प्रति टन का उच्च मूल्य भी इन्हें प्राप्त हुआ है। विमुद्रीकरण के कारण थोड़ी मंदी का प्रभाव दिखाई पड़ा क्योंकि खरीद्दार कम मूल्य दे रहे थे परन्तु कुछ समय के पश्चात् परिस्थितियों में दिसंबर – जनवरी के दौरान थोड़ा सुधार भी हुआ। शीतकाल के कम तापमान का आगामी काल के पुष्पन पर सकारात्मक प्रभाव होगा क्योंकि वृक्षों को यथेष्ट विश्राम अवधि प्राप्त होगी। मृग बहार (मानसून बहार) के नागपुरी संतरे की दशा अच्छी है तथा इसकी तुड़ाई फरवरी मार्च एवं अप्रैल, 2017 में होगी। इस बहार में फलों की वृक्षों पर संख्या अधिक होने के कारण फलों का आकार छोटा होता है तथा उत्पादकों को मूल्य भी अच्छा प्राप्त नहीं होता है। यथेष्ट फलाकार के लिए यह सलाह दी जाती है की उचित सिंचाई तथा पोषक आपूर्ति की जानी चाहिए तथा मोनोपोटेशियम नाइट्रेट, जिब्रेलिक अम्ल व यूरिया की संस्तुत मात्रा का वृक्षों पर छिड़काव किया जाना आवश्यक है।

मैं सभी सहभागियों को मंगलमय तथा आगामी वर्ष 2017 की शुभकामना प्रेषित करता हूँ तथा यह भी आशा करता हूँ कि नागपुरी संतरा व किन्नू फलोत्पादकों को इस नव वर्ष में उचित मूल्य प्राप्त होगा।

नीबूवर्गीय फल क्षेत्र

राष्ट्रीय नीबूवर्गीय संग्रह, जो के.नी.फ.अनु.सं., नागपुर में स्थित है, राष्ट्रीय सक्रिय जनन द्रव्य स्थल भी है, यहाँ नीबूवर्गीय जनन द्रव्यों की 614 प्रविष्टियां एकत्रित की गई है। ए. आई. सी. आर. पी. (फल) के दस सक्रिय केन्द्रों में से 8 केन्द्रों नें 721 प्रविष्टियों का संरक्षण किया है। कुल 1335 प्रविष्टियों में कई प्रविष्टियां एक सी हो सकती है जिनकी पहचान कर के हटाना एक दुष्कर कार्य है तथा इसमें काफी समय लग सकता है। इन्हें आई. पी. जी. आर. आई. (नीबूवर्गीय फल) विवरणों के अनुसार चित्रित करना तथा सूचीकृत करने की आवश्यकता है। इस कार्य को करने के लिए अत्यन्त कुशल कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है तथा विभिन्न ए. आई. सी. आर. पी. (फल) केन्द्रों पर इस कार्य को करने के लिए कर्मचारियों का क्षमता विकास किया जाना आवश्यक है। संस्थान के 614 प्रविष्टियों में से 515 प्रविष्टियों का एन. बी. पी. जी. आर. से आई. सी. / इ सी क्रमांक प्राप्त हो चुका है तथा इनका विश्लेषात्मक आँकड़ा भी उपलब्ध है। 132 प्रविष्टियों की सूची प्रकाशित की जा चुकी है तथा शेष 140 प्रविष्टियों के लिए सूची बनाई जा रही है। वर्ष 2014, 2015 एवं 2016 में नई किस्मों को प्रेक्षत्र में उठी हुई क्यारियों पर कतार प्रणाली के अंतर्गत संस्थान में लगाया गया है जिसमें 7, 12, 9, 4 व 5 किस्में क्रमशः संतरा, मोसंबी, नीबू, ग्रेपफ्रूट तथा लेमन की हैं। स्वदेशी व विदेशी जनन द्रव्यों की उपयोगिता के संदर्भ में एन. आरसी. सी. नागपुरी संतरा बीज रहित –4, नीबू एन. आर. सी. सी. –7 व 8, एलिमो (सि. माइक्रोफाईला) मूलवृंत, फ्लेम ग्रेपफ्रूट, यू. एस. पमेलो –145, कटर वेलेंसिया, एन. आर. सी. सी. पमेलो –5 तथा एन. आर. सी. सी. ग्रेपफ्रूट –6 को 15–20 सालों के मूल्यांकन पश्चात् आशाजनक पाया गया व इन्हें संतरा उत्पादकों के लिए विमोचित कर दिया गया है।

संस्थान से

भा. कृ. अनु. प. - के. नी. फ. अनु. सं., नागपुर पर सचिव डेयर तथा महानिदेशक का आगमन

डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव (डेयर) तथा महानिदेशक, भा. कृ. अनु. प. का आगमन भा. कृ. अनु. प. – के.नी.फ.अनु.सं., नागपुर पर 27 अक्टूबर, 2016 को हुआ। इनके द्वारा संस्थान में किसान निवास भवन के निर्माण हेतु शिलान्यास किया गया। इन्होनें संस्थान की नई सिंचाई सुविधाओं अर्थात अंबाझरी तालाब पर स्थित जल प्राप्ति कुआँ भी देखा जिसका निमार्ण महाराष्ट्र जीवन प्राधिकरण द्वारा संस्थान की टी. एम. सी. पौधशाला तथा प्रयोगशालाओं को जलापूर्ति के लिए किया गया था। वैज्ञानिकों के साथ चर्चा करते हुए डॉ. मोहापात्रा नें रोगमुक्त पौध सामग्री के उत्पादन जैसी उपलब्धियों पर तथा फसल सुधार, फसल उत्पादन, फसल सुरक्षा, नीबूवर्गीय फल प्रसंस्करण व मूल्य संवर्धन पर चल रहे कार्यो की भी सराहना की।

डॉ. महापात्र ने नीबू के लिए कैंकर प्रतिरोधी किस्मों,फाइटाफ्थोरा प्रतिरोधी मूलवृंतों, युग्मकोषीय अंकुरों की पहचान, नीबूवर्गीय फलों में अंतर्सस्यन, फसल विविधता, जलवायु समोत्थानशील प्रौद्योगिकी का विकास, संरक्षण कृषि विधियों जैसे –पलवार, बूंद–बूंद सिंचाई, उर्वरण, नीम विलेपित यूरिया इत्यादि के विकास पर बल दिया। ई–विपणन का महत्व तथा मूल्य श्रृंखला की स्थापना जैसे विषयों पर भी बल दिया। इसी क्रम में इन्होनें पूर्ण सस्योत्तर पैकेजिंग विकसित करने के महत्व पर भी प्रकाश डाला जिससे भारत सरकार के कौशल विकास कार्यक्रम के द्वारा उद्यमीयता को प्रोत्साहन, निर्माण एवं पोषित किया जा सके।

डॉ. महापात्र महानिदेशक, भा.कृ.अनु.प., किसान निवास का शिलान्यास करते हुए

डॉ. एम. एस. लदानिया, निदेशक, एम.जे.पी. द्वारा अंबाझरी तालाब पर निर्मित जल प्राप्ति कूऐं को दिखाते हुए।

डॉ. महापात्र, भा. कृ. अनु. प. के महानिदेशक व सचिव (डेयर) भा.कृ.अनु.प. के नागपुर में स्थित संस्थानों के कर्मचारियों को संबोधित करते हुए।

अनुसंधान उपलब्धियाँ

- **भा. कृ. अनु. प. - के.नी.फ.अनु.सं. द्वारा पाँच नीबूवर्गीय फल किस्मों का विमोचन** : भा. कृ. अनु. प. – के.नी.फ.अनु.सं. कई वर्षो से नीबूवर्गीय फल किस्मों का किसानों के लिए विकास व मूल्यांकन का कार्य कर रहा है। तीन विदेशी किस्में प्रस्तावित की गई हैं जिसमें यू. एस. पमेलो – 145, कटर वेलेंसिया तथा फ्लेम ग्रेपफ्रूट सम्मिलित हैं। स्वदेशी पौधों से दो किस्मों का विकास किया गया अर्थात एन. आर. सी. सी. पमेलो –5 व एन. आर. सी. सी. –6 का विमोचन संस्थान तकनीकी तथा किस्म विमोचन समिति द्वारा किया गया है। इन किस्मों के द्वारा विविधता तथा नीबूवर्गीय फल किस्मों का प्रसंस्करण व सलाद उपयोगिता हेतु लंबे समय से हो रही मध्य भारत के नीबूवर्गीय फलोत्पादकों की मांग को पूरा किया जा रहा है।
- **यू. एस. पमेलो -145** : इस नये किस्म के फलों का गूदा सफेद तथा औसत फल भार 700–500 ग्राम के लगभग है। इसका स्वाद मीठा, फलों में 15 के आस–पास फल की फाके तथा रस की मात्रा अधिक है। प्रति हे. उत्पादकता 40–50 टन है। फल अगस्त के माह में परिपक्व हो जाता है तथा इसकी अक्टूबर तक तुड़ाई की जा सकती है। नागपुरी संतरा अक्टूबर के माह में बाजार में प्राप्त होता है अतएव बाकी की तुलना में नीबूवर्गीय फल समूह का यह अगेती फल है।
- **कटर वेलेंसिया** : यह सख्त छिलके वाली किस्म है तथा विश्व भर में प्रसंस्करण के लिए अति उपयुक्त मानी गयी है। फल नवंबर के अंतिम सप्ताह तक परिपक्व हो जाते हैं जिन्हें जनवरी तक तोड़ा जा सकता है। इसका उपयोग खाने के लिए तथा रस के लिए भी किया जा सकता है। यह किस्म संस्थान में 10 वर्षों के परिक्षण के पश्चात् विमोचित की गई है। 6 x 6 मी. की दूरी पर लगाये गये वृक्षों में इसकी उपज 21 टन प्रति हे. है जबकि कम दूरी अर्थात 5 x 5 मी. पर इसकी उपज बढ़कर 30 टन प्रति हे. हो सकती है। रसदार फलों का स्वाद मीठा एवं सुगंध उत्तम पाई गई है।
- **एन.आर. सी. सी. पमेलो-5** : इस पौधे की पहचान पूर्वोत्तर के मिजोरम – त्रिपुरा की सीमा पर स्थित वनों से की गई है। फल का स्वाद उत्कृष्ट मीठा है तथा इसमें अमरूद जैसा स्वाद होता है। इसका गूदा लाल तथा रसीला है। फल का भार 800 ग्राम के लगभग पाया गया है। इसकी उपज क्षमता अधिक है तथा पूर्ण विकसित वृक्ष पर लगभग 400 फल लगते हैं। 5 x 5 मी. की दूरी पर लगाये गये लगभग 400 वृक्षों के द्वारा प्रति हे. उपज 132 टन के आस–पास दर्ज की गई है। पमेलो के फल में लाइकोपिन के अतिरिक्त नारिंजिन तथा अन्य फ्लेविनाईड पाये जाते है। लाइकोपिन में औषधीय गुणधर्म होते है।
- **एन. आर. सी. सी. ग्रेपफ्रूट -6** : इस किस्म का विकास पूर्वोत्तर से चुने गये वृक्षों के द्वारा किया गया है। विगत 15 वर्षों से संस्थान में इसका मूल्यांकन किया जा रहा है। इस किस्म से प्रति वृक्ष लगभग 400 फल प्राप्त होते हैं जो कि 152 कि. ग्रा. प्रति वृक्ष है तथा सकल उपज 42 टन प्रति हे. है। प्रारंभ में अगस्त, 2017 के दौरान कुछ पौधे किसानों को दिये जायेंगे तथा पौधशाला में इनके गुणन हेतु प्रशिक्षण भी प्रदान किया जायेगा।

फ्लेम ग्रेपफ्रूट   यू. एस. पमेलो-145   कटर वेलेंसिया

एन.आर.सी.सी. पमेलो-5   एन.आर.सी.सी. ग्रेपफ्रूट-6

संस्थानीय गतिविधियाँ / आयोजित कार्यक्रम

अंतर्राष्ट्रीय मृदा वर्ष -2016

संस्थान द्वारा 5 दिसंबर, 2016 को 'मृदा स्वास्थ्य दिवस' मनाया गया। इसके अंतर्गत एक कार्यक्रम का आयोजन हेतीकुंडी, तहसील – कारंजा, जिला – वर्धा में भा. कृ. अनु. प. – के.नी.फ.अनु.सं. तथा विदर्भ के लिए टी. एम. सी. के सहयोजन तथा कृषि विभाग, महाराष्ट्र सरकार के साथ किया गया। इस अवसर को अनुग्रहित करने के लिए श्री विजय महंत, तहसील कृषि अधिकारी, कारंजा, सौः कुसुम ताई गजभिये, सदस्य जिला परिषद्, सौ. चन्द्राताई शेंद्रे, ग्राम सरपंच, हेतीकुंडी उपस्थित रहे। इस आयोजन में 125 नीबूवर्गीय फल उत्पादक किसान सम्मिलित हुए तथा मृदा स्वास्थ्य कार्ड का वितरण भी किया गया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने का श्रेय डॉ. आर. ए. मराठे, प्रधान वैज्ञानिक तथा मृदा स्वास्थ्य कार्ड के केन्द्र अधिकारी, श्री डी.ओ. गर्ग, श्री. जी. एम. बोरकर एवं वी. पी. पट्टीवार के प्रयासों को जाता है।

डॉ. एम. एस. लदानिया, निदेशक, सी. सी. आर. आई. मृदा स्वास्थ्य कार्ड का नीबूवर्गीय फलोत्पादकों को वितरण करते हुए।

आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

धार, मध्य प्रदेश में कृषि विज्ञान केन्द्र, धार के साथ मिलकर 3 नवंबर, 2016 को प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजित किया गया। पाँच विभिन्न जन जातीय ग्रामों के 80 किसान इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। श्री आशीष कानेश, उप निदेशक बागवानी इस कार्यक्रम के प्रमुख अतिथि थे। कार्यक्रम के अंत में एक प्रतिक्रिया सत्र का भी आयोजन किया गया।

जन जातीय के अंतर्गत ३ नवंबर, २०१६ को धार, मध्य प्रदेश में प्रशिक्षण कार्यक्रम।

जन जातीय उप - योजना के अंतर्गत अन्य परिसर में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

- जन जातीय उप –योजना के अंतर्गत भा. कृ. अनु. प. –के.नी.फ.अनु.सं., नागपुर द्वारा ''नीबूवर्गीय फलों की उत्पादन प्रौद्योगिकी'' पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन पांढुरना, जिला – छिंदवाड़ा, मध्य प्रदेश में विदर्भ, मराठवाड़ा तथा छिंदवाड़ा के लिए टी. एम. सी. के अंतर्गत 3 दिसंबर, 2016 को आयोजित की गई। 20 महिला प्रतिभागियों के साथ 100 जन जातीय किसानों नें इसमें भाग लिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में डॉ. आई. पी. सिंह, प्रधान वैज्ञानिक, डॉ. ए. के. दास, प्रधान वैज्ञानिक, डॉ. ए. ए. मुरकुटे, वरिष्ठ वैज्ञानिक तथा टी. एस. पी. केन्द्र अधिकारी, भा. कृ. अनु. प. – के.नी.फ.अनु. सं., नागपुर, श्री डी. ओ. गर्ग, एस. एम. एस., टी. एम. सी. विदर्भ तथा डॉ. के. डी. नांदेकर, टी. एम. सी. समन्वयक छिंदवाड़ा उपस्थित थे। प्रशिक्षण सामग्री में कवकनाशी (कार्बेडेजिम),सिकेटियर, संतरा उत्पादन पुस्तिका (हिन्दी) का वितरण भी किया गया साथ ही प्रौद्योगिकीयों का निदर्शन भी किया गया।

जन-जातीय के अंतर्गत पांढुरना, मध्य प्रदेश में 30 दिसंबर, 2016 को प्रशिक्षण का आयोजन।

संस्थान के कर्मचारियों का कौशल विकास एवं क्षमता निर्माण:

- **डॉ. दिनेश कुमार, प्रधाान वैज्ञानिक (बागवानी) :** ''खाद्य विश्लेषण में स्पेक्ट्रोफोटोमेट्रिक तकनीकी (जी. सी. एम. एस, एल. सी. एम. एस. /एम. एस., एफ. टी. आई. आर. तथा एन. एम. आर.)'', सी. एस. आई. आर. – सी. एफ. टी. आरआई., मैसूर में 3–7 अक्टूबर, 2016 को आयोजित।
- **श्री सी. वी. बनकर (ए. सी. टी. ओ.), पुस्तकालय :** ''पश्चिम क्षेत्र (गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा एवं मध्य प्रदेश) के लिए ''जे–गेट / सेरा'' पर प्रशिक्षण एवं भिज्ञता कार्यशाला, नवसारी कृषि विश्वविद्यालय (एन. ए. यू.), नवसारी, गुजरात में 8 अक्टूबर, 2016 को आयोजित।
- **श्री किरण कुमार कोम्मू, वैज्ञानिक (सूत्रकृमि शास्त्र) :** भा. कृ. अनु. प. – सी. सी. आर. आई, नागपुर के विभिन्न प्रयोगशालाओं में एक महीने की अनुस्थापन प्रशिक्षण, 19 अक्टूबर से 18 नवंबर, 2016।
- **अंजिथा जार्ज, वैज्ञानिक (कीट शास्त्र) :** कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग का सूचना के अधिकार पर आनलाईन पोर्टल अर्थात आर. टी. आई. मांग पत्र / आवेदन एवं प्रार्थना प्रबंधन प्रणाली (आर. टी. आई – एम. आई. एस.) से संबंधित जन प्राधिकारी के केंद्र आधिकारियों का प्रशिक्षण, नार्म, हैदराबाद में 25 अक्टूबर, 2016 को आयोजित।
- **डॉ. ए. के. दास, प्रधान वैज्ञानिक (पादप रोग विज्ञान) :** ''कृषि में जैव सूचना साधन एवं तकनीक'' पर प्रशिक्षण नार्म, हैदराबाद, 1–10 नवंबर, 2016।
- **श्री सुनील कुमार यू. टी., ए. सी. टी. ओ. :** ''ग्रामीण कृषि प्रसंस्करण क्षेत्र में नवीनीकरणीय उर्जा का उत्पादक उपयोग'' पर शीतकालीन शाला, सी. आई. ए. ई., भोपाल, 9–29 नवंबर, 2016 को आयोजित।
- **श्री सी. बी. बनकर, ए. सी. टी. ओ. (पुस्तकालय) :** ''आधुनिक डीजीटल अंकीय पुस्तकालय प्रबंधन'' पर राष्ट्रीय कार्यशाला एवं प्रशिक्षण, भा. कृ. अनु. प. – केन्द्रीय समुद्री मत्स्य अनुसंधान संस्थान, कोच्ची, 25–26 नवंबर, 2016।
- **श्री किरण कुमार कोम्मू, वैज्ञानिक (सूत्रकृमि शास्त्र) :** भा. कृ. अनु. प. – पादप जैव प्रौद्योगिकी का राष्ट्रीय अनुसंधान केन्द्र, नई दिल्ली में ए. आर. एस. के प्रवेश स्तरीय व्यवसायिक प्रशिक्षण के लिए प्रतिनियुक्ति, 28 नवंबर, 2016 से अगामी तीन महीनों तक।

- **श्री आर. डी. ढ़ोने, वरिष्ठ तकनीकी सहायक :** ''कृषि जल प्रबंधन के लिए मूलभूत संकल्पनायें तथा विधियॉ'' भा. कृ. अुन. प. – आई. ए. आर. आई., नई दिल्ली, 19–24 दिसंबर, 2016।
- **डॉ. आर. ए. मराठे, प्रधान वैज्ञानिक (एस. पी. एस. डब्ल्यूसी) :** ''नेतृत्व विकास के लिए प्रबंधन विकास कार्यक्रम'', नार्म, हैदराबाद, 19–30 दिसंबर, 2016।

गठबंधन एवं सहयोग

- एफ. एस. एस. ए. आई., स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, नई दिल्ली के सौजन्य से ''नीबूवर्गीय फलों का खाद्य उद्योग में सक्षम उपयोग के लिए इनमें स्थित सक्रिय घटकों एवं प्रति उपचायकों का विश्लेषण'' पर एक प्रकल्प को 2 वर्षों के लिए स्वीकृती 24 अक्टूबर, 2016 को प्रदान की गई।

उत्कृष्ट संदर्भित जर्नलों में प्रकाशित शोध प्रत्र

- अनाव्रत, विनोद व मोकड़े ममता (2016)। नागपुरी संतरा उत्पादकों में अनुबंधित कृषि के परिचालन संभाव्यता का ग्रहणबोध। एग्रीकल्चरल साइंस डाइजेस्ट, 36(4): 287–290।
- पाणिग्रही, पी. एवं श्रीवास्तव, ए. के. (2016)। जल की कमी युक्त गर्म उप–आर्द्र क्षेत्रों के अंतर्गत नीबूवर्गीय फल बगीचों में सिंचाई जल का प्रभावकारी प्रबंधन।साइंसिया हार्टिकल्चर, 210: 6–13।
- राव, सी. एन. एवं सोनाली धीके (2016)। फल मक्खियों के चार प्रजातियों,बेक्ट्रोसेरा प्रजाति (डिप्टेरा : टेफ्रीटिडे) का नागपुरी संतरे के जलवायु मापदण्डों के संबंध में संख्या गतिकि।जर्नल आफ इन्सेक्ट साइंस।29(1): 17–24।

अन्य संस्थान / संस्थाओं में प्रशिक्षण के अंतर्गत प्रस्तुत व्याख्यान

- श्रीवास्तव, ए. के. (2016)। ''नींबूवर्गीय फलों में 4 आरः संकल्पना एवं प्रयोग'' सी. ए. एफ. टी. प्रशिक्षण कार्यक्रम में : कृषि, पर्यावरण एवं मानव स्वास्थ्य के लिए चिंता का विषय। मृदा सुरक्षा एवं मृदा स्वास्थ्य पर जे. एन. के. वी. बी., जबलपुर, मध्यप्रदेश में 15 अक्टूबर, 2016।
- श्रीवास्तव, ए. के. (2016)। ''नीबूवर्गीय फलों में जलवायु स्र्माट मृदा उर्वरता प्रबंधन'' मृदा सुरक्षा एवं मृदा स्वास्थ्य पर जे. एन. के. वी. बी., जबलपुर, मध्यप्रदेश में 15 अक्टूबर, 2016।
- विजया कुमारी, एन. (2016)। ''नीबूवर्गीय फलोद्योग में उत्पादन सुधार तथा लाभ के लिए प्रसार तकनीकियाँ'' जीवन विज्ञान शिक्षकों के लिए रिफ्रेशर पाठयक्रम, आर. टी. एम., नागपुर विश्वविद्यालय, 10 नवंबर, 2016।
- कुमार दिनेश (2016)। ''विपणन एवं सस्योत्तर प्रबंधन'' बाजार ज्ञान एवं समाचार सेवाओं पर लघु कालिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, विपणन एवं निरीक्षण निदेशालय (डी. एम. आई.), नागपुर, 24 नवंबर, 2016।

संस्थान के प्रकाशन

- सी. एन. राव, ए. के. दास, नीलेश वजीरे एवं सागर नेरकर (2016)। (संपादक : एम. एस. लदानिया, ए. डी. हुच्चे, ए. के. दास, सी. एन. राव, नीलेश वजीरे एवं सागर नेरकर) नीबूवर्गीय फलों में कीट तथा रोगों की पहचान व प्रबंधन पर कीट मार्गदर्शिका (मराठी पाकेट डायरी), के.नी.फ.अनु.सं., नागपुर, पृष्ठ संख्या 60।

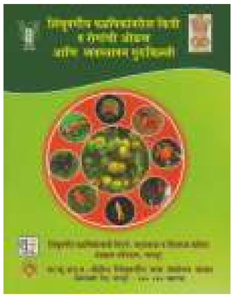

शोधपत्र/ पोस्टर/ संक्षेप में कार्यवाही / संगोष्ठी स्मारिका/ परिसंवाद/ सम्मेलन इत्यादि

- अंजिथा एलेक्जेंडर जार्ज, वैज्ञानिक (कीट शास्त्र) नें भा. कृ. अनु. प. – आई. आई. एच. आर., बैंगलोर द्वारा 7–8 अक्टूबर, 2016 को आयोजित 'राष्ट्रीय कीट शास्त्री बैठक' में एक पोस्टर प्रस्तुत किया।
- अंजिथा एलेक्जेंडर, जार्ज, वैज्ञानिक (कीट शास्त्र) नें एच. एस. आई. द्वारा 15–18 नवंबर, 2016 को आयोजित 7वें बागवानी कांग्रेस में ''मध्य भारत में सिट्रस पर्ण भक्षी, फाइलोक्निस्टिस सिट्रेला स्टेंटन के प्रबंधन हेतु स्वेदशी संश्लेषित लैंगिक फेरोमोन'' शीर्षक पर एक पोस्टर प्रस्तुत किया।
- दास, ए. के., कुमार, ए., नेरकर, एस. एवं ठाकरे, एन. (2016) नें कृषि महाविद्यालय, नागपुर में 27–30 नवंबर, 2016 को आयोजित ''14वें अंतर्राष्ट्रीय ट्राईकोडर्मा तथा ग्लियोक्लेडियम कार्यशाला में ''मध्य भारत के विदर्भ क्षेत्र के स्थानीय उत्कृष्ट ट्राइकोडर्मा किस्म के द्वारा नीबूवर्गीय फलों के फाइटोफ्थोरा जड़ सड़न व गमोसिस का जैविक नियंत्रण ' शीर्षक पर प्रस्तुति दी।
- वर्धने, ए., भोसे, एस., शर्मा, पी., मोटघरे, एम. व घोष, डी. के.(2016) नें ''विषाणु रोगों के प्रबंधन पर वैश्विक परिप्रेक्ष्य पर भारतीय विषाणु शास्त्र समिति (एन. एस.), विरकान –2016 के अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, 7–10 दिसंबर, 2016 में सिट्रस ट्रिसटेजा विषाणु के त्वरित पहचान हेतु रिवर्स ट्रांसक्रिपसन् – लूप मीडियेटेड एम्पलीफिकेशन (आर. टी. –लैंप) विधि का विकास शीर्षक पर प्रस्तुती दी।
- मोटघरे, एम., शर्मा, पी., भोसें, एस., वर्धने, ए., धर, ए. के. एवं घोष, डी. के. (2016) ने ''विषाणु रोगों के प्रबंधन पर वैश्विक परिप्रेक्ष्य पर भारतीय विषाणु शास्त्र समिति (एन. एस.), विरकान –2016 के अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, 7–10 दिसंबर, 2016 में नीबूवर्गीय पादप के विभिन्न अंगों में सिट्रस येलो मेजाइकबडनावाईटस (सी. एम. बी. डब्ल्यू.) का प्रसार तथा इसका रियल टाईम पी. सी. आर. के विकास पर परिणाम आधरित विषाणु पहचान विधि शीर्षक पर प्रस्तुति दी।

मौखिक शोध पत्र - संगोष्ठी / परिसंवाद / सम्मेलन इत्यादि

भारतीय बागवानी समिति द्वारा 15–18, नवंबर, 2016 को नई दिल्ली में आयोजित 7वां भारतीय बागवानी कांग्रेस में मौखिक प्रस्तुति हेतु आमंत्रित शोध पत्र।

- लदानिया, एम. एस. (2016)। नीबूवर्गीय फलों में वितान प्रबंधन, सघन रोपाई तथा विकसित उत्पादन प्रणाली।
- कुमार दिनेश एवं एम. एस. लदानिया (2016)। बागवानी फसलों के सस्योत्तर प्रबंधन में नेनोटेक्नोलॉजी चेक करना है।।
- श्रीवास्तव, ए. के. एवं शिरगुरे, पी. एस. (2016)। फल फसलों के उत्कृष्ट उत्पादकता हेतु मृदा उर्वरता का प्रबंधन – आगामी मार्ग।
- विजया कुमारी, एन. (2016)। नीबूवर्गीय उद्योग में उत्पादन सुधार तथा लाभार्जन के लिए समेकित वंशवृद्धि कार्यक्रम।
- श्रीवास्तव, ए. के. (2016)। बागवानी फसलों के प्रबंधन में जलवायु योग्य मृदा उर्वरता प्रबंधन, एन. बी. एस. एस. व एल. यू. पी., नागपुर द्वारा आयोजित ''स्मार्ट कृषि के लिए एकीकृत भूमि उपयोग नियोजन'' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के अंतर्गत'' सतत् भूमि उपयोग प्रबंधन हेतु एक कार्यावली '' सत्र में, 10–13 नवंबर, 2016।

पुस्तक अध्याय

- विजयाकुमारी, एन. (2016)। बागवानी के द्वारा किसानों के आय को दोगुना करने के लिए उत्पादन तथा लाभार्जन में सुधार हेतु एक एकीकृत सिट्रस

(वाईवार) तथा ग्रीनींग से प्रभावित बगीचों के पत्तियों के नमूनों को 5, 6 तथा 23 अक्टुबर, 2016 व 6 तथा 8 दिसंबर, 2016 को एकत्रित किया।

- 2. डॉ. विनोद अनाव्रत, प्रधान वैज्ञानिक (प्रसार) नें वड़ेगॉव तथा अकोला क्षेत्र के नीबू बगीचों का सर्वेक्षण 2–5 नवंबर, 2016 को किया।
- 3. डॉ. (श्रीमती) अंजिथा जार्ज, श्री वी. एन. ढेंगरे, श्रीमती सोनाली धीके तथा राज्य कृषि विभाग के तीन स्काऊटों के दल के साथ हार्टसेप प्रकल्प के अंतर्गत दो गॉवों क्रमशः खापा (नरसाला) एवं परसोड़ी, सावनेर (जिला – नागपुर) का दौरा नीबूवर्गीय फल बगीचों में घोघें की समस्या के संबंध में किया।
- 4. डॉ. आई. पी. सिंह, प्रधान वैज्ञानिक (बागवानी), डॉ. ए. के. दास, प्रधान वैज्ञानिक (पादप रोग), डॉ. सी. एन. राव, प्रधान वैज्ञानिक (कीट शास्त्र) एंव डॉ. ए. ए. मुरकुटे, वरिष्ट वैज्ञानिक (बागवानी) इन चार वैज्ञानिकों के दल नें केवी. के. कलिमपोंग के साथ मिलकर दार्जिलिंग संतरे के बगीचों की खराब होती अवस्था का अध्ययन करने हेतु विभिन्न स्थानों पर 29 नवंबर, 2016 से 3 दिसंबर, 2016 तक सर्वेक्षण किया। कलिमपोंग, सिट्टांग, बोंगबस्ती तथा मिरिक क्षेत्रों का दौरा किया गया एवं विश्लेषण के लिए नमूने भी एकत्रित किये गये।

संस्थान में आगंतुक

इस तिमाही के दौरान संस्थान, नागपुर में दौरा करने वाले किसानों, विद्यार्थियों तथा प्रशिणार्थियों की संख्या निम्नवत है।

राज्य	किसानों की संख्या
तमिलनाडू	14
हरियाणा	10
महाराष्ट्र	57
मध्य प्रदेश	210

विद्यार्थी

- सेवादल महिला महाविद्यालय, नागपुर से सूक्ष्म जीव तथा जैव प्रौद्योगिकी विभाग, स्नातक तृतीय वर्ष के 50 छात्र तथा 3 कर्मचारियों नें 5 अक्टूबर, 2016 को संस्थान का दौरा किया।
- बागवानी विज्ञान विश्वविद्यालय, बागलकोट, कर्नाटक कृषि महाविद्यालय, कोलार के 61 छात्रों (35 छात्रायें तथा 26 छात्र) के साथ दो प्राध्यापकों नें 19 नवंबर, 2016 को संस्थान का दौरा किया।
- कृषि महाविद्यालय (डॉ. पी. डी. के. वी.), गढ़चिरोली स्नातक (कृषि) अंतिम वर्ष के 37 विद्यार्थियों नें 19 अक्टूबर, 2016 को संस्थान का दौरा किया।
- वनस्पति एंव जैव प्रौद्योगिकी विभाग, कटक, ओडीसा, स्नातकोत्तर, जैव प्रौद्योगिकी के तीन संकाय सदस्यों के साथ 14 विद्यार्थियों नें 1 अक्टूबर, 2016 को संस्थान का दौरा किया।
- बागवानी महाविद्यालय, सिरसी, बागवानी विज्ञान विश्वविद्यालय, बागलकोट, कर्नाटक के तीन महाविद्यालय कर्मचारियों के साथ अंतिम वर्ष के 51 छात्रों नें 1 दिसंबर, 2016 को संस्थान का दौरा किया।
- बागवानी एवं वानिकी महाविद्यालय, डॉ. यशवंत सिंह परमार बागवानी व वानिकी विश्वविद्यालय नेरी, हिमाचल प्रदेश के तीन महाविद्यालय कर्मचारियों के साथ 62 छात्रों नें संस्थान का दौरा किया।
- कर्मयोगी बाबा राव जी जोगदंड कृषि महाविद्यालय, वाशीम के तीन प्राध्यापकों ने 26 नवंबर, 2016 को संस्थान का दौरा किया।

प्रशिक्षणार्थी

भा. कृ. अनु. प. - के.नी.फ.अनु.सं. तथा विश्वनाथ कृषि महाविद्यालय के मध्य एम. ओ. यू. पर हस्ताक्षर।

डॉ. ए.सी. बरबोरा, प्रमुख सी.आर.एस., तिनसुकिया तथा डॉ. एम.एस. लदानिया, निदेशक, प्रस्तावित स्थल का दौरा करते हुए।

- रामेती, अमरावती में प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले 40 प्रशिणार्थियों नें श्री किरण करंजीकर के नेतृत्व में 4 अक्टूबर, 2016 को इस संस्थान का दौरा किया।
- भा. कृ. अनु. प. – सिरकाट के तीन नयें वैज्ञानिकों नें अपने ओरियेंटेशन कार्यक्रम के अंतर्गत, 10 नवंबर, 2016 को संस्थान का दौरा किया।

सुशासन / स्वच्छ भारत मिशन

- भा. कृ. अनु. प. – के. नी. फ. अनु. सं. के परिसर में एक स्वच्छता कार्यक्रम का आयोजन 2 अक्टूबर, 2016 को स्वच्छ भारत उपक्रम के तहत किया गया। निदेशक द्वारा स्वच्छता शपथ दिलाई गई जिसके पश्चात् कार्यालय परिसर, फार्म, आवासीय स्थान इत्यादि स्थानों पर सभी संस्थान एवं टी. एम. सी. के कर्मचारियों के साथ निदेशक के नेतृत्व में गहन सफाई कार्य किया।
- 16 से 31 अक्टूबर, 2016 के मध्य संस्थान में स्वच्छता पखवाड़ा मनाया गया।

वर्ष के अंतर्गत सफाई हेतु प्रारंभ किये गये विभिन्न कदम इस प्रकार हैं :-

- नागपुर के नगर पालिका द्वारा कार्यालय तथा आवासीय परिसर से सप्ताह में दो बार कचरा एकत्रित करता है।
- विभिन्न प्रयोगशालाओं / स्थानों पर सड़ने योग्य कचरा, धातु / प्लास्टिक कचरा, कॉच इत्यादि के लिए अलग–अलग रंग के कचरा पात्र लगाये गये।
- खराब सामग्री / कचरे का पुर्नउपयोग।
- प्लास्टिक / धातु / कॉच इत्यादि के लिए फार्म के स्थानों पर बड़े गढ्ढे बनाये गये है। पौधे से प्राप्त अवशेषों तथा सड़ने योग्य कचरे के लिए अलग गढ्ढे बनाये गये हैं।

संस्थान के अंतर्गत रोग मुक्त पौध सामग्री का वितरण

- नीबूवर्गीय मूलवृंतों, फलों तथा बीज के कुल 5805 रोग मुक्त रोप सामग्री का वितरण किया गया जिसके द्वारा रू 52,238 का राजस्व अर्जित किया गया।

पुरस्कार, सम्मान तथा पहचान

- डॉ. ए. के. श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक (मृदा विज्ञान) को भारतीय के

डॉ. पंजाबराव देशमुख कृषि विश्वविद्यालय, अकोला में २७-२९ दिसंबर, २०१६ को आयोजित एग्रोटेक -२०१६ कृषि प्रदर्शनी।

बागवानी समिति, नई दिल्ली का फेलो 15 नवंबर, 2016 को घोषित किया गया।

- ए. डी. हुच्चे, ए. के. श्रीवास्तव, पी. एस. शिरगुरे, सी. एन. राव, ए. के. दास, लल्लन सतार, चैतन्य देशपांडे, मयूर गावंडे, वी. जे. शिवंकर एंव एम. एस. लदानिया को ''जलवायु परिवर्तन एवं सीट्रस : एक शाब्दिक परिदृश्य'' प्रस्तुती के लिए ''भारतीय बागवानी कांग्रेस'' के दौरान उत्कृष्ट पोस्टर पुरस्कार, 15–18 नवंबर, 2016 को नई दिल्ली में प्राप्त हुआ जिसका आयोजन भारत के बागवानी समिति, नई दिल्ली नें किया था।
- डॉ. ए. के. श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक (मृदा विज्ञान) को प्रोफेशनल उत्कृष्टता वर्ग के अंतर्गत एक्वा फाऊंडेशन एक्सेलेंस अवार्ड द्वारा विश्व एक्वा फाऊंडेशन अवार्ड, 24 नवंबर, 2016 को नई दिल्ली में प्राप्त हुआ।

विशिष्ट आगंतुक

- श्री एस. के. सिंह, श्री देवेन्द्र कुमार एवं डॉ. ए. के. वशिष्ठ, भा. कृ. अनु. प., नई दिल्ली के द्वारा संस्थान का दौरा 14 अक्टूबर, 2016 को किया गया।

विदर्भ, मराठवाड़ा एवं छिंदवाड़ा के लिए नीबूवर्गीय फल फसलों पर प्रौद्योगिकी उपक्रम

टी. एम. सी. के अंतर्गत इस तिमाही में निम्नलिखित कार्यों को किया गया।

विदर्भ के नीबूवर्गीय फलोत्पादकों के लिए आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

- चांदूर रेल्वे, जिला – अमरावती में 7 अक्टूबर, 2016 को आयोजित कार्यक्रम में 198 संतरा उत्पादक सम्मिलित हुए। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री विरेन्द्र जगताप, विधायक, धामणगॉव द्वारा की गई थी।
- 17 अक्टूबर, 2016 को सुसुंदरी, तहसील – कलमेश्वर, जिला नागपुर में 92 नीबूवर्गीय फलोत्पादकों नें भाग लिया।
- 9 नवंबर, 2016 को दिग्रस, तहसील – पातुर, जिला – अकोला में 215 नीबूवर्गीय फलोत्पादकों नें भाग लिया।
- 5 दिसंबर, 2016 को हेटीकुण्डी, तहसील – कारंजा गाड़गे, जिला – वर्धा में 120 नीबूवर्गीय फलोत्पादकों नें भाग लिया।

लाईकेन तथा मास से संक्रमित दार्जिलिंग संतरे का एक वृक्ष, ग्राम-डुपटिन, मिरिक

फल मक्खी का लार्वा दार्जिलिंग संतरा फल को खाते हुए

मिरिक क्षेत्र के दार्जलिंग संतरा उत्पादकों के साथ भा. कृ. अनु.प.- सी. सी. आर. आई. का वैज्ञानिक दल चर्चा करते हुए।

भा.कृ.अनु.प.-के.नी.फ.अनु.सं., वैज्ञानिकों का दल तथा राज्य सरकार कर्मचारी व जीटीस के साथ दार्जलिंग में चर्चा करते हुए।

मराठवाड़ा

- 18 नवंबर, 2016 को सावर गॉव, तहसील – धूम, जिला – उस्मानाबाद में 169 नीबूवर्गीय फलोत्पादकों ने भाग लिया।
- 30 नवंबर, 2016 को पानग्राम, तहसील – पैठाण, जिला – औरंगाबाद में 103 नीबूवर्गीय फल उत्पादकों ने भाग लिया।

छिंदवाड़ा

- 18 नवंबर, 2016 को पारड़ी, तहसील – पांदुरणा, जिला – छिंदवाड़ा में 85 नीबूवर्गीय फलोत्पादकों नें भाग लिया।
- 30 दिसंबर, 2016 को मोही, तहसील – पांदुरणा, जिला – छिंदवाड़ा में 120 नीबूवर्गीय फलोत्पादकों नें भाग लिया।

अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

विदर्भ

- 15 – 18 नवंबर, 2016 को प्रशिक्षण में 12 अधिकारियों ने भाग लिया।

मराठवाड़ा

- 15 – 18 नवंबर, 2016 को प्रशिक्षण में 2 अधिकारियों ने भाग लिया।

छिंदवाड़ा

- 3–6 अक्टूबर, 2016 को प्रशिक्षण में 8 अधिकारियों ने भाग लिया।
- 7 –10 अक्टूबर, 2016 को प्रशिक्षण में 8 अधिकारियों ने भाग लिया।
- 5–8 दिसंबर, 2016 को प्रशिक्षण में 9 अधिकारियों ने भाग लिया।

प्रौद्योगिकी का निदर्शन

- विदर्भ, मराठवाड़ा व छिंदवाड़ा में इस तिमाही के दौरान किसानों के खेतों में कुल 51 निदर्शन प्रस्तुत किये गये।

टी. एम. सी. के अंतर्गत रोग मुक्त पौध सामग्री का वितरण

विदर्भ

- नीबूवर्गीय फल पौधों के कुल 5699 रोग मुक्त पोध सामग्री का वितरण किया गया जिसके द्वारा रू. 2,29,770 /– की राजस्व प्राप्ति हुई।

मराठवाड़ा

- नीबूवर्गीय फल पौधों के कुल 12,106 रोग मुक्त रोप सामग्री का वितरण किया गया जिसके द्वारा रू. 2,45,700 /– की राजस्व प्राप्ति हुई।

छिंदवाड़ा

- नीबूवर्गीय फल पौधों के कुल 658 रोग मुक्त रोप सामग्री का वितरण किया गया जिसके द्वारा रू. 32,900 /– की राजस्व प्राप्ति हुई।

कार्मिक

नियुक्तियाँ

- श्री किरण कुमार कोम्मू, वैज्ञानिक (सूत्र कृमि) ने 18 अक्टूबर, 2016 को पदभार संभाला।
- श्री योगेश कडियन, प्रशासनिक अधिकारी (परिविक्षा) ने 18 नवंबर, 2016 को पदभार संभाला।
- श्री अमोल कोकणे, वाई. पी. –II ने 3 अक्टूबर, 2016 को पद भार संभाला।

सेवानिवृत्ति

- श्री मोहन फिरके, एस. एस. एस., 30 नवंबर, 2016 को कार्यमुक्त हुए।

त्याग पत्र / सेवामुक्ति

- सुश्री नेहा, ए. ठाकरे, एस. आर. एफ., ने 17 दिसंबर, 2016 को त्याग पत्र दिया।
- श्री सागर, जी. नेरकर, एस. आर. एफ. ने 31 दिसंबर, 2016 को त्याग पत्र दिया।
- श्री विक्रम, एम. गिते, तकनीकी सहाय, टी. एम. सी. ने 31 दिसंबर, 2016 को त्याग पत्र दिया।

आई.एस.ओ. 9001: 2008

डॉ. एम. एस. लदानिया, निदेशक, के.नी.फ.अनु.सं., स्वच्छता शपथ दिलाते हुए ।

परिसर को साफ करने में व्यस्त के.नी.फ.अनु.सं. के कर्मचारी।

- निगरानी दल नें आई एस ओ 9001:2008 की वार्षिक निगरानी / लेखा के लिए 14 दिसंबर, 2016 को दौरा किया।

सुझाव /प्रतिसूचना

खापा (नरसाला) तथा परसोड़ी ग्राम, तहसील – सावनेर, जिला – नागपुर के कुछ बगीचों के सर्वेक्षण का कार्य 29 नवंबर, 2016 को उप विभागीय कृषि अधिकारी, नागपुर के अनुरोध पर संतरा बगीचों में घोघों की समस्याओं के लिए किया गया। डॉ. (श्रीमती) अंजिथा जार्ज, वैज्ञानिक (कीट शास्त्र), श्री वी. एन. ढेंगरे, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी तथा श्रीमती सोनाली घीके, अनुसंधान सहयोगी (हार्टसैप) के एक दल ने श्री. आर. के. सोलाव, कीट निगरानीकर्ता तथा इनके दल के तीन स्काउट श्री मनोज धोटे, श्री अमोल बंसोड एंव श्री रीतेश कुलसांगे, राज्य कृषि विभाग के साथ हार्टसैप प्रकल्प के अंतर्गत यह सर्वेक्षण कार्य किया गया।

इस सर्वेक्षण के दौरान, ग्राम खापा (नरसाला) तथा परसोड़ी, तहसील – सावनेर, के प्रत्येक पॉच –पॉच संतरा बगीचों के अंतर्गत लगभग 10 हे. क्षेत्र में अध्ययन किया गया। यह सभी बगीचे परिपक्व अवस्था में थे। वृक्षों पर विशेषतया शाखाओं के जोड़ों पर बहुत कम संख्या में घोघें पाये गये। कई वृक्षों के तनों पर घोघों की विष्ठा उपलब्ध थी। 5–10 प्रतिशत बगीचों में 4–5 घोघें प्रति वृक्ष की कम संख्या पर भी तना के बाहरी छिलके पर हल्की खुरचन के चिन्ह दिखाई दे रहे थे। घोघें की सक्रिय वंशावली द्वारा वृक्षों को हानि पहुचातें या खाते हुए नहीं पाया गया।

स्थानीय किसानों से चर्चा करने से ज्ञात हुआ कि वर्षा काल के प्रांरभ के पश्चात् ही पिछले 2–3 वर्षों से ही इन घोघें की समस्या दिखाई पड़ रही है। घोघें की सक्रिय वंशावलियों द्वारा सब्जी की फसलों जैसे – फलीदार सब्जियों, टमाटर, पत्ता गोभी, फूल गोभी, ककड़ी, बैंगन तथा कपास के पौधों के कोमल भागों को खाते तथा हानि पहुँचातें देखा गया। इस संक्रमण का प्राथमिक कारण अन्य स्थानों से गॉवों में निर्माण कार्यों के लिए लाया गया बालू है। इसके अलावा बेतरतीब तरीके से आपस में मिल रही शाखाओं के कारण कम सूर्य प्रकाश के परिणामस्वरूप वहॉं की सूक्ष्म जलवायु में नमी व आर्द्रता की वृद्धि हो गई है। नमी एवं अंधेरा ये दो अजैविक कारण घोघों की उत्तरजीविता के लिए सहायक होते हैं। वृक्षों की ठीक प्रकार से कटाई–छंटाई नहीं होने के कारण तथा अधिक पानी से सिंचाई भी इन बगीचों में पाई गई।

घोघों की घटनाओं को नियंत्रित करने के लिए निम्नलिखित उपाय करने की सलाह दी गई है:

- जीवित घोघों को पकड़कर इन्हें 2 प्रतिशत नमक के घोल में डालकर मार देना चाहिए।

श्री एस.के. सिंह, अतिरिक्त सचिव व वित्त सलाहकार, डेयर, भा.कृ.अनु.प., श्री देवेन्द्र कुमार, निदेशक वित्त तथा डॉ. ए.के. वशिष्ट, ए.डी.जी., पी.आई.एम./ ई.एस.एम., के.नी.फ.अनु.सं. पौधशाला का दौरा करते हुए।

- इन स्थानों पर 2 प्रतिशत मेटाअलडिहाईड का प्रयोग।
- आकर्षक व मारने वाला खाद्य : 60 किग्रा गेहूँ / चावल की भूसी ; 6 किग्रा. गुड ; 1 किग्रा मेथोमिल युक्त किण्वित कर बनाये गये उत्पाद को इनकी खाद्य सामग्री के रूप में उपयोग करना चाहिए।

श्री विरेन्द्र जगताप, विधायक, धामण गॉव, जिला - अमरावती, सहभागियों को संबोधित करते हुए।

सम्पादित : डॉ. एम.एस. लदानिया, निदेशक, डॉ. आर. के. सोनकर, प्रधान वैज्ञानिक (उद्यानिकी), डॉ. अशोक कुमार, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (पादप रोग),
संकलित : सुश्री लिली वर्गीस, सहायक प्रमुख तकनीकी अधिकारी
प्रकाशक : डॉ. एम.एस. लदानिया, निदेशक, केन्द्रीय नीबूवर्गीय फल अनुसंधान संस्थान, नागपुर, महाराष्ट्र
नीबूवर्गीय फल समाचार पत्र, केन्द्रीय नीबूवर्गीय फल अनुसंधान संस्थान का एक अधिकारिक समाचार पत्र है
पो.बाक्स नं. 464, शंकर नगर, **पोस्ट ऑफिस**, अमरावती रोड़, नागपुर–440010 (महाराष्ट्र)
फोन न. : 0712–2500249, 2500615, 2400813 **फैक्स :** 0712–2500813
वेबसाइट : www.ccringp.org.in **ईमेल :** director.ccri@icar.gov.in
मुद्रितः एस्के स्केना ग्राफिक्स, गुजरवाड़ी, नागपुर